Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

कँवलनयन कपूर के काव्य-संग्रह

Pooja Rani*

Research Scholar, Ph.D. Hindi, South India Hindi Publicity Meeting, Madras

----------X----------

कँवलनयन कपूर के साहित्य में जहाँ समसामयिक समस्याओं को दिखाया किया गया का वर्णन है, वहीं इन समस्याओं से निपटने का यथा सम्भव हल भी बताया गया है। यह सर्वप्रथम समस्या का गहन अध्ययन करते हैं फिर यथोचित उसे दूर करने का प्रयास करते हैं।

कँवलनयन कपूर के काव्य–संग्रह :

1. एक समन्दर मेरे अन्दर

2. बौणियाँ किरणां और उदास गुलमोहर

'एक समन्दर मेरे अन्दर' प्रस्तुत काव्य–संग्रह पन्द्रह कविताओं से सुसज्जित है, जिसकी अधिकांश कविताएँ साहित्यकार की भावनाओं से जुड़ी हुई हैं। इन कविताओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

'दर्पण' कविता में कवि दर्पण से स्वयं की समानता करता हुआ कहता है कि जब वह अपने समाज में, देश में, दिल में, ईर्ष्या–द्वेष, प्रेम–घृणा, वफा–बेवफाई तथा गन्दगी–सफाई को महसूस करता है। तब उसे ही वह कविताओं के माध्यम से अपने पाठकों के समक्ष रखता है। इसमें उसकी सहायक उसकी भावनाएँ बनती हैं। 'मन' कविता में कवि कहता है जब उस अदृश्य शक्ति (ब्रह्म) ने इन पाँच तत्त्वों को मिलाकर मनुष्य रूपी खिलौना बनाया और वह इससे खेलने लगा तो साहित्यकार ने अपना चंचल मन इस खिलौने में डाल दिया, जिससे उन तत्त्वों का सवरूप ही बिगड़ गया। दो मित्रों को आधार बनाकर लिखी गई कविता 'मित्रा के नाम' एक दोस्त की बयानी है। एक मित्र कहता है कि बचपन में जब उन्होंने आसमान से बरसती गर्मी को अपने नंगे बदन पर सहते हुए कसम खाई थी कि वे ज़िन्दगी भर जुदा नहीं होंगे। परन्तु दूसरा दोस्त जगत् की तिलस्मी छाया, चकाचौंध में ऐसा फंस गया कि सत्य–असत्य का रंग भी भूल गया।

'फिर पुकारो' कविता कँवलनयन कपूर के लेखन–कर्म में ऐसा ही आयाम प्रस्तुत करती है। जीवन के अंधे जंगल में जब कवि अपने को खोया हुआ पाता है तो उसे अकस्मात् अपना बचपन याद आ जाता है और कवि भावनाओं के वशीभूत हो अपने बचपन की समस्त क्रीड़ाओं को कविता के माध्यम से प्रस्तुत करता है। साथ–ही–साथ वह शहरी जीवन के सूनेपन पर भी व्यंग्य करता है। 'मैं नहीं' कविता भावों की अभिव्यक्ति का वाहक है, तो प्रेम भावों की उच्चता का प्रतीक है। कवि स्पष्ट करना चाहता है कि प्रेम वह अनुभूति है जिसे महसूस तो किया जा सकता है, परन्तु अभिव्यक्त करना मुश्किल है।

'सागर–एक' कविता में कवि कहता है कि उसके भीतर भावनाओं का एक सागर है, जो सोया हुआ है और यदि तुम या कोई अन्य व्यक्ति उससे बातचीत करना चाहे, उसको समझना चाहे तो वह उससे दो–चार होता है और अपनी अनुभूति को व्यक्त करके खुशी महसूस करता है। उसके भीतर भावनाओं का समन्दर है, वह समन्दर कवि की कल्पनाएँ हैं।

'सागर दो' भावनात्मक कविता है, जिसमें कवि अपनी समानता सागर से करता है। 'हमें बताओ' कविता में कवि बताता है कि उसे जिन लोगों पर पूरा विश्वास था उन्होंने उसे धोखा दिया और उसकी जान के दुश्मन बन गए। 'नेता का बयान' कवि की व्यंग्य प्रधान कविता है। इसमें कवि भारतीय नेताओं पर व्यंग्य करता है। जहाँ वह एक ओर देश की स्थिति को उजागर करता है, वहीं दूसरी ओर इस स्थिति के लिए नेताओं को जिम्मेदार ठहराता है। कवि बताना चाहता है कि उसका उद्देश्य भारतीय प्रजातन्त्र भारतीय नेताओं व भारतीय जनता पर व्यंग्य करना है।

'मूर्ख होने का सुख' आधुनिक समाज के उस वर्ग पर व्यंग्य करना है जो व्यर्थ की चिंताओं से ग्रस्त होकर परेशान होते हैं। वह बताना चाहता है कि मूर्ख होने के सुख से कवि का आशय मात्रा यह रहा है कि सब कुछ देखते–सुनते हुए भी चिन्तामुक्त होकर जीना चाहिए। वह विवश होकर कहता है कि जो मनुष्य सुखी होकर जीना चाहता है वह चतुराई छोड़ उनके समान मूर्ख हो जाए। उनके लिए मूर्खता ही महामार्ग है जो भ्रम, भय, भाव तथा भेद से मुक्त है।

'राम' एक प्रतीकात्मक कविता है। इस कविता का कथ्य रामायण के नायक मर्यादा पुरुषोत्तम 'राम' तथा उनकी शक्ति 'सीता' पर आधारित है। राम तथा सीता प्रतीक मात्र है। वास्तव में कविता का कथ्य एक–एक आदमी से जुड़ा हुआ है। यदि मनुष्य में लगन और निष्ठा हो तो फिर उसके लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं। वास्तव में प्रत्येक मनुष्य के जीवन से जुड़ी 'राम' कविता किसी भी मानव तथा उसकी हिम्मत की कहानी है, जिसकी समय–समय पर परख अत्यन्त आवश्यक है। 'कृष्ण' कविता का कथ्य 'महाभारत' की उस कथा से जुड़ा हुआ है, जिसमें जरा नामक शिकारी के बाण लगने से भगवान कृष्ण की मृत्यु हो जाती है। कवि कहता है कि आज जो धर्म के नाम पर ही कार्य हो रहे हैं। वह वास्तव में अधर्म है कवि कृष्ण कविता में कहता है–

'कौन जाने धर्म

कौन जाने सत्य

विगत भी स्वप्न

आगत् भी स्वप्न

अपना है यदि कुछ तो केवल वर्तमान।'1

'शिशु होकर' कविता आदमी के विकास की कहानी है। कविता के प्रारम्भ में ही कवि अपने आप से प्रश्न करता है कि मैं कौन हूँ? विकास के प्रथम चरण में उसे लगता है कि वह मछली का और मछली की सड़ांध को छिपाने के लिए इत्र–पुलैल लगाकर छिप जाता था। दूसरे चरण में वह ऊँट बन जाता है, जो सहमा–सहमा, चुप–चुप जीता है, कम खाता–पीता है, ईमानदारी से गुप–चुप गिर–गिर तथा मर–मर कर बोझा ढोता रहता है। विकास के तीसरे चरण में वह वनराज बन जाता है। रचनाकार की इस सोच मात्र से एक अबोध, अनजान, दुधमुँहा एवं नन्हा बच्चा उसके भीतर रोने लगता है। तभी साहित्यकार के सभी हितैषी उसे कहते हैं कि तुमने उस चीज को शिशु होकर पा लिया, जो तुम अपने सभी चरणों को पार करने पर भी नहीं पा सके।2

'धन्यवाद कान्हा' प्रतीकात्मक कविता है। यह कविता भगवान् श्रीकृष्ण और उद्धव को लेकर लिखी गई है, जिसमें श्रीकृष्ण भक्ति, वात्सल्य एवं उद्धव बुद्धिवाद का प्रतीक है। इसमें मथुरा–महानगर की अशान्ति का, निर्दयता का, बड़ी–बड़ी अट्टालिकाओं तथा अहंकार का प्रतीक है। ब्रज प्रकृति की तरह निश्छल निष्कपट है। उद्धव–बुद्धिवादी का तथा कृष्ण भगवान रूप, आराध्य तथा भक्त वत्सल है। कवि ने पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिकता की प्रतीति कराई गई है।3

'महाचुप' कविता भावनाओं के प्रस्तुतिकरण के क्षणों में कवि–कर्म की सीमाओं और विवशता को रेखांकित करती है। कवि लिखते–लिखते महसूस करता है कि उसे जो कुछ अभी कहना है, वह उसके लिए शब्द नहीं बटोर पा रहा। इसलिए उसे चुप होना पड़ता है।4

बौणियाँ किरणां ते उदास गुलमोहर :

डॉ॰ कँवलनयन कपूर और डॉ॰ रमेश कुमार द्वारा रचित संकलन बौणियाँ किरणां ते उदास गुलमोहर में हिन्दी पंजाबी कविताओं को एक साथ प्रस्तुत किया गया है। दुनिया के अनेक मुल्कों और विशेषकर भारत में हुए भाषायी दंगों के इतिहास से यह तथ्य उभरकर सामने आये हैं कि भाषाओं को व्यक्तिगत स्वार्थों या दलगत उठक–पटक का आधार तो बनाया जा सकता है। लेकिन अपनी–अपनी रचनात्मक शक्ति के सन्दर्भ में विभिन्न भाषाओं की छोटी बड़ी दीवारें खड़ी नहीं की जा सकती। 'टूटना तो टूटना' में कवि ने प्रेम को ही चित्रित किया है और इस सत्य से अवगत कराया है कि प्रेम में विश्वास नहीं है तो प्रेम व्यर्थ है।

'भुरभुरी पगडंडियों' में भी मानव के स्वार्थीपन को चित्रित किया गया है। कवि यह बताना चाहता है कि आने वाली पीढ़ी में केवल स्वार्थ ही शेष रह गया है। 'रजत जयंती' कविता में उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो अपने स्वार्थ और लालची मनोवृत्ति के वश में होकर देश का सौदा करने से नहीं हिचकिचाते। देश की समस्याओं पर पर्दा डालकर प्रतिवर्ष भरपूर उत्साह के साथ उत्सव मनाते हैं। लेकिन उनको यह मालूम नहीं है कि उनके स्वार्थ के कारण देश अवनति की ओर जा रहा है। 'नपुंसक संस्कृति'–1 और नपुंसक संस्कृति–2 में भी स्वार्थी नेताओं की ओर संकेत किया गया है जो अपने स्वार्थ के कारण देश की गति में बाधा बनते हैं। 'कृष्ण आत्मः सृजन की पीड़ा' एक दार्शनिक कविता है। इसमें कवि ने दर्शन जैसे गूढ़ विषय को प्रस्तुत किया है और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, समन्वय, सहनशीलता उदारता आदि को आधार बनाया है।5

'एक प्रश्न तुम्हीं से' में नैतिक और सामाजिक मूल्यों के पतन को दिखाया गया है। कविता 'केंचुली सी याद' में कवि अपनी प्रेमिका की याद में लीन दिखाई देता है, उसे लगता है कि प्रेमिका के बिछुड़ने पर भी वह उसके साथ ही है। इसी प्रकार 'पुराना साल' जो कि एक लघु कविता है में कवि बताता है कि जिस प्रकार नया वर्ष आने पर भी पुराना वर्ष याद रहता है। उसी प्रकार कवि विवाह के पश्चात् भी अपनी प्रेमिका को भुला नहीं पाया है। यही कारण है कि वह अपनी पत्नी को भी प्रेमिका के नाम से ही सम्बोधित करता है।

'तीन बिम्ब' कविता में कवि ने बचपन, जवानी और बुढ़ापा तीनों अवस्थाओं को चित्रित किया है। प्रेम और वियोग पर आधारित कविता 'रेन स्ट्रीम एण्ड स्पीड' में कवि स्वयं के अधूरे प्रथम मिलन को याद करता है जिसे याद कर उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। आज उसके वह खुशी के दिन उदासी में परिवर्तित हो चुके हैं। वह स्वयं को नितान्त अकेला पाता है।6

'उदास गुलमोहर' कविता का मूल स्वर प्रेम है। इस कविता में कवि यह बताना चाहता है कि प्रेम किसी भी व्यक्ति के साथ हो सकता है, चाहे वह जड़ हो या चेतन। 'फूल कपास के' कविता में कवि अपनी प्रेमिका के साथ बिताए अतीत के पलों को याद करता है, उसका प्रेमिका से बिछोह हो चुका है परन्तु आज भी कपास के फूलों के समान प्रेमिका की याद उसके दिल में समाई हुई है जो उसे उसके सुनहरे पलों को याद रहती रती है।7

संदर्भ :

कँवलनयन कपूर, कृष्ण, पृ. 61

कँवलनयन कपूर, शिशु होकर, पृ. 65

कँवलनयन कपूर, धन्यवाद कान्हा, पृ. 70

कँवलनयन कपूर, महाचुप, पृ. 74

डॉ॰ कँवलनयन कपूर और डॉ॰ रमेश कुमार, भुरभुरी पगडंडियों, पृ. 8

डॉ॰ कँवलनयन कपूर और डॉ॰ रमेश कुमार, तीन बिम्ब, पृ. 19

डॉ॰ कँवलनयन कपूर और डॉ॰ रमेश कुमार, उदास गुलमोहर, पृ. 37

Corresponding Author

Pooja Rani*

Research Scholar, Ph.D. Hindi, South India Hindi Publicity Meeting, Madras

E-Mail –